धामूपुर उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले का एक छोटा–सा गाँव है। वहाँ एक दर्जी की दुकान के बाहर कुछ चहल–पहल थी।
जरा इनकी सिलाई कर दें।
हाँ भाई जान। अब्दुल, जरा ठीक से नाप ले लो।
मैं कुछ बड़ा करना चाहता हूँ। मैं अपने देश की सेवा करना चाहता हूँ।
एक दिन अब्दुल हमीद का एक दोस्त, जो सेना में था, उससे मिलने आया।
तुम वर्दी में बहुत अच्छे लगते हो। मैं भी फौज में भर्ती होना चाहता हूँ।
क्यों नहीं होते ! तुम एक अच्छे खिलाड़ी हो। यह तुम्हारे लिए आसान होगा।

फौज में भर्ती होने की अनुमति माँगने के लिए युवा अब्दुल हमीद अपने पिता के पास आया।
अब्बा, मैं फौज में भर्ती होना चाहता हूँ।
क्यों? तुम्हें घर पर रहना, कपड़ों की सिलाई करना और अच्छी रोजी–रोटी कमाना चाहिए।
अब्दुल हमीद की माँ से बात करने के लिए हमीद के पिता घर गए।
तुम्हारा बेटा फौज में भर्ती होना चाहता है।
हमें उसके लिए एक दुल्हन खोजनी चाहिए। एक बार वह बाप बन जाए, फिर वह फौज को भूल जाएगा।

जल्द ही रसूलन बीबी से अब्दुल हमीद की शादी हो गई।
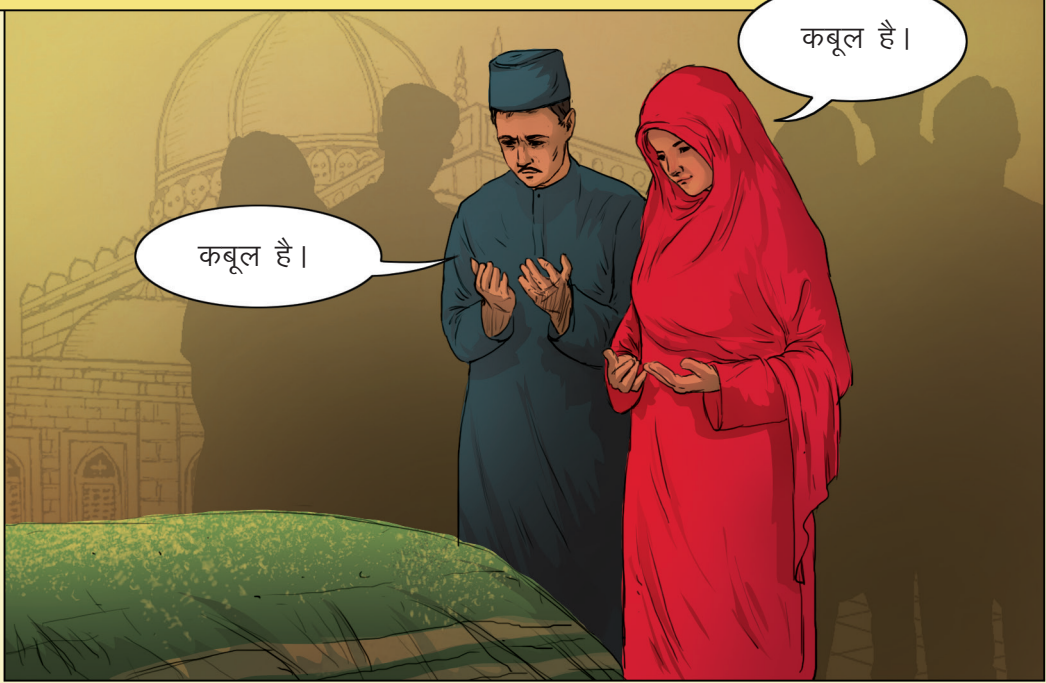
कबूल है।

कबूल है।

लेकिन शादी के बाद भी अब्दुल हमीद कपड़ों की सिलाई या खेतों में काम से खुश नहीं था।

आप इतने उदास क्यों हैं?

मैं कुछ बड़ा करना चाहता हूँ। मैं देश की सेवा करना चाहता हूँ।

तो फिर क्यों नहीं करते? मैं आपकी पत्नी हूँ, हमेशा आपके साथ रहूँगी।

अब्दुल हमीद फौज की भर्ती रैली में पहुँचा। उसने योग्यता की सारी शर्तें पूरी कीं।

बहुत अच्छे !
तुम्हारा फिटनेस लेवेल बढ़िया है।

थैंक यू सर !

अब्दुल हमीद को 7 दिसंबर, 1954 को ग्रेनेडियर्स की चौथी बटालियन में भर्ती कर लिया गया। वह एक समर्पित सिपाही था और फौजी कवायदों और खेलों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेता था।

वर्ष 1962 में जब चीन ने भारत पर हमला किया, तब 4 ग्रेनेडियर्स को नेफा (अब अरुणाचल प्रदेश) में थग ला रिज पर तैनात किया गया।

फायर !
चीनियों को मुँहतोड़ जवाब दो !

एक के बाद एक चीनी सैनिक टुकड़ियाँ भारत की सुरक्षा चौकियों पर हमला कर रही थीं।
बूम...म...!
कवर के लिए झुक जाओ।
धाँय!
धाँय!
धाँय!
दोनों तरफ से जमकर गोलीबारी हो रही थी।
लड़ाई में उसके दो सिपाही मारे गए। इससे उसका दिल टूट गया।

भारतीय सैनिक तमाम बुरी परिस्थितियों के विरुद्ध बहादुरी से लड़े...
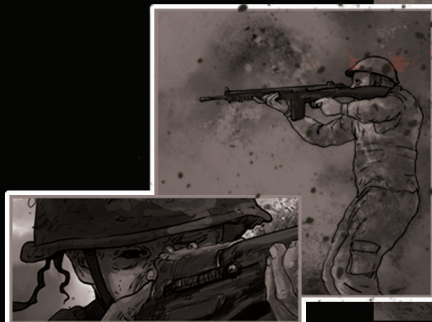
लेकिन संख्याबल में अधिक शक्तिशाली चीनी सैनिक उनपर छा गए ।

भारत–चीन युद्ध के बाद अब्दुल हमीद को दूसरे विश्व युद्ध के विलीज जीप पर 106 मि.मी. रिकॉयललेस गन चलाना सीखने के लिए कहा गया।
दुश्मन के टैंक पर निशाना लगाओ। ठहरो, यह जद में आ जाए तब फायर करो। ठीक ?
यस सर !
अब्दुल हमीद ने शानदार प्रदर्शन किया और युवा रंगरूटों को प्रशिक्षित करने के लिए जल्द ही उसकी एक प्रशिक्षक के रूप में तरक्की कर दी गई।
शाबाश! तुमने बहुत अच्छा काम किया है। हमें तुम पर गर्व है।
थैंक यू सर !
सितंबर 1965 में पाकिस्तान ने भारत के जम्मू और कश्मीर एवं पंजाब में फिर हमला किया। छुट्टी पर गए कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार (सीक्यूएमएच) अब्दुल हमीद घर में रेडियो सुन रहे थे।
पाकिस्तान ने भारत पर चढ़ाई कर दी है। सारी छुट्टी रद्द कर दी गई है। सभी फौजी ड्यूटी पर रिपोर्ट करें।
मैंने एक बुरा सपना देखा है । मुझे बड़ी चिंता हो रही है। अपना ख्याल रखना।
मैं एक सैनिक हूँ। तुम एक सैनिक की पत्नी हो। चिंता मत करो।

4 ग्रेनेडियर्स को खेमकरण–भिखीविंड एक्सिस की पाकिस्तानी बख्तरबंद आक्रमण से रक्षा का काम सौंपा गया।
पाकिस्तान के पास नए पैटन टैंक हैं। उनके पास रात में लड़ने के लिए इन्फ्रारेड क्षमता है। चौबीसों घंटे सतर्क रहो।
यस सर !
सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद को टैंकों का सामना करने वाला थल सेना का सबसे जरूरी हथियार, रिकॉयललेस गन को सँभालने के लिए कहा गया।
फौरन खंदक खोदो। हमारे सुरक्षा ठिकानों को बहुत मजबूत होना चाहिए।
कैमुफ्लाश्ज कपड़े* से आरसीएल जीप को ढक दो। ऊपर से बचाव का समय नहीं है।
रात भर वे गन्ने के खेतों में पाकिस्तान के हमले का इंतजार करते रहे।
*छद्म आवरण

8 सितंबर, 1965 को सुबह लगभग 8.30 बजे पहले तीन पाकिस्तानी टैंक आते दिखे।
ठहरो...ठहरो, उन्हें और करीब आने दो...और करीब... जद में।
फायर!
फायर!
अब्दुल हमीद ने दूरी का हिसाब लगाया। जब अगला टैंक महज 30 गज दूर रह गया, वह बोल पड़े–
106 मिमी आरसीएल गन से रॉकेट छूटा और निशाने पर जा लगा। उस नए पाकिस्तानी टैंक में आग लग गई और उस पर सवार सारे सैनिक मारे गए।
भागो भागो... भागो...
बाकी दो पाकिस्तानी टैंकों पर सवार सैनिक अपने–अपने टैंक छोड़ भाग गए।

शाबाश अब्दुल ! बहुत अच्छे ! चौकस रहो। और हमला होगा।

वह बहादुरी के साथ तब तक चुपचाप रुके रहे जब टैंक मुश्किल से 50 गज की दूरी पर रह गया, और तब एकाएक चीख पड़े।
फायर...फायर... उसे भागने मत दो !
उनकी आरसीएल गन ने अपने निशाने पर गोला दागा और एक और पाकिस्तानी टैंक आग की भेंट चढ़ गया, उसके चालक दल के सभी लोग मारे गए। तेजी से स्थान बदलते हुए अब्दुल हमीद ने पहले ही दिन पाकिस्तान के तीसरे टैंक को मार गिराया।
बूम...म!
शाबाश! अब्दुल, तुमने अकेले दम तीन टैंकों को ध्वस्त कर डाला है। लाजवाब निशाना ! मुझे तुम पर बहुत नाज है !
थैंक यू सर! यह हमारी पूरी टीम का काम है। हम देश के लिए जान कुर्बान कर देंगे।
नहीं अब्दुल। तुम देश के लिए जीतोगे। तुम्हें जिंदा रहना है और सिपाहियों की अगली पीढ़ी को तैयार करना है।
यस सर!
पूरी रात सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद ने अपनी जीप की सीट पर बिता दी, अगले हमले के लिए चौकस।

9 सितंबर को पाकिस्तानी सेना के 1 बख्तरबंद डिविजन ने तीन बार हमला किया।

पाकिस्तानी फौज को पता नहीं था कि बहादुर अब्दुल हमीद और उनकी 4 ग्रेनेडियर्स की टोली लेटे हुए उसी का इंतजार कर रहे थे।

फायर... अभी!

धुस्स!

बूम...म...!

एक और पाकिस्तानी टैंक आग का शिकार हुआ।

चौथे टैंक ने वापस भाग जाने की कोशिश की, पर तेजी से स्थान बदलते हुए अब्दुल हमीद अैर उनकी जीप के चालक मोहम्मद नसीम टैंक के करीब पहुँच गए।
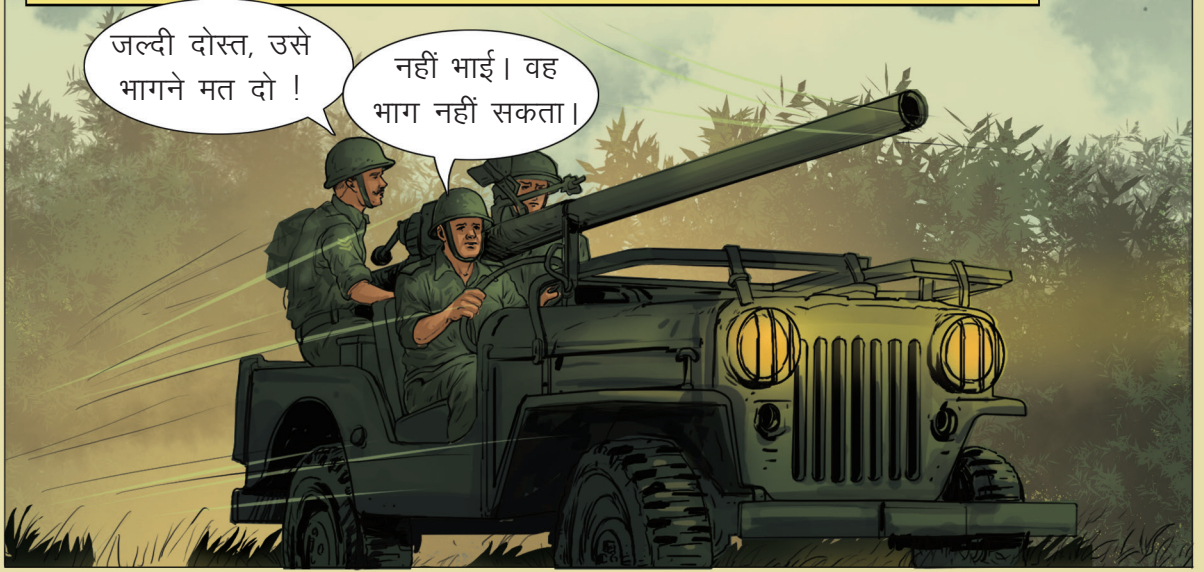
चौथे टैंक का भी वही हस्र हुआ।
बैंग! टैंक जल उठा। उसके चालक दल के सभी लोग मारे गए।

धाँय !

भारतीय शिविर में खुशी की लहर थी। युद्ध के इतिहास में यह पहला अवसर था जब टैंकरोधी एक मामूली हथियार – जीप पर रखी एक आरसीएल–ने पाकिस्तान के इतने अत्याधुनिक टैंकों को ध्वस्त कर डाला था। अब्दुल हमीद की अतुलनीय बहादुरी को देखते हुए उनके लिए परमवीर चक्र की सिफारिश की गई।

लेकिन काम अभी पूरा नहीं हुआ था। निहायत हताश पाकिस्तानी सेना ने 10 सितंबर को एक भारी हवाई हमले के साथ एक और हमला किया। पाकिस्तानी सेबर जेटों ने भारतीय ठिकानों पर बमबारी करते हुए भारतीय मोर्चाबंदियों को कमजोर करने कोशिश की।

बूम...म...!

फिर पाकिस्तानी बमवर्षक फौज ने अपनी तोपों से हमला कर दिया। यह सोचकर कि भारत की मोर्चाबंदियाँ टूट चुकी हैं, पाकिस्तान की बख्तरबंद सेना ने हमला शुरू कर दिया।

गोलीबारी के बावजूद, अपनी जान को भारी जोखिम में डालते हुए, चालक और सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद पाकिस्तानी टैंकों पर झपट पड़े।
जल्दी करो ! पाकिस्तानी टैंक सड़क के छोर की ओर बढ़ रहे हैं। आओ, हम उन्हें रोकें।
पाकिस्तानी टैंकों के समीप पहुँचते ही, अब्दुल हमीद ने एक बार फिर निशाना साधा।
धाँय...!
फायर! और एक और पाकिस्तानी टैंक आग की भेंट चढ़ गया।
फायर!

जल्दी दोस्त, पोजिशन बदलो।
चालक मोहम्मद नसीम जीप घुमा ही रहा था कि एक गोली उसके कंधे में आ लगी।
आह! मुझे गोली लगी।
आह!
तब तक पाकिस्तानी कमांडर सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद की जीप को पाकिस्तानी टैंकों के सामने देखकर खतरा भाँप चुका था।

दोनों ओर से एक साथ गोली चली। दोनों का निशाना सटीक था। पाकिस्तानी टैंक ध्वस्त हो गया। सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद की जीप भी ध्वस्त हो गई।

वीर शिरोमणि अब्दुल हमीद ने अपनी जान कुर्बान कर दी, पर पाकिस्तान के 8 टैंकों को अकेले दम ध्वस्त कर डाला।

उनके साथी सैनिक लगातार गोलाबारी करते हुए शेष बचे पाकिस्तानी टैंकों से तब तक लड़ते रहे, जब तक पाकिस्तानी अपने टैंक छोड़कर भाग नहीं गए।

युद्ध के इतिहास में थलसेना के किसी एक सिपाही ने इतने टैंक कभी ध्वस्त नहीं किए – 4 ग्रेनेडियर्स के सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद का यह वीरतापूर्ण कारनामा, जिन्होंने देश पर अपनी जान न्योछावर करने से पहले अपनी 106 रिकॉयललेस गन से 8 पाकिस्तानी टैंकों को ध्वस्त कर दिया।

इस साहस भरे काम के लिए उन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

सर्वदा शक्तिशाली।

– सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद द्वारा नष्ट किये गए टैंकों की संख्या पर मिली सूचना पर मतभेद है।
– परमवीर चक्र की प्रशस्ति पर 3 टैंकों का उल्लेख है। किंतु ऐसा इसलिए भी है क्योंकि यह सूचना पहले दिन, 8 सितंबर (जब उन्होंने पाकिस्तान के पहले 3 टैंकों को मार गिराया था) को भेजी गई।
– ग्रेनेडियर्स रेजिमेंट के अभिलेख में सीक्यूएमएच अब्दुल हमीद के द्वारा 8 टैंकों को ध्वस्त किए जाने का उल्लेख है।